3. मैदान का एक गांव कोटगांव

इस पाठ के उपशीर्षकों व चित्रों को देखकर जानो कि मैदान के गांवों की किन बातों के बारे में पाठ में चर्चा होगी। मैदानों की इन बातों के बारे में तुमने क्या-क्या देखा और सुना है – चर्चा करो।

चित्र 1. नर्मदा नदी पर सब्ज़ियों से लदी नाव

नदियों का मैदान

नर्मदा नदी के किनारे होशंगाबाद शहर बसा है। होशंगाबाद से कुछ दूरी पर तवा नदी बहती है। हां यह वही तवा नदी है, जो तुमने पृष्ठ 176 के चित्र में देखी थी। यह नदी अपना पानी लाकर नर्मदा में गिराती है, इस तरह तवा नर्मदा नदी की एक **सहायक नदी** है। यह सतपुड़ा पर्वत से निकलकर होशंगाबाद के पूर्व में बांद्राभान नाम की जगह पर नर्मदा नदी में मिलती है।

क्या तुमने कभी किसी नदी-नाले को दूसरे नदी-नाले में मिलते देखा है?

हम होशंगाबाद से तवा नदी की ओर सड़क से चले तो दूर-दूर तक खेत ही खेत दिखाई दिए। कहीं लंबे-चौड़े जंगल नहीं दिखे। यहां बिलकुल समतल, सपाट भूमि है - कोई पहाड़ नहीं, तेज़ ढलानें नहीं। यह नर्मदा नदी का मैदान है।

होशंगाबाद से लगभग नौ किलोमीटर चलने पर तवा नदी मिली। यह एक बहुत चौड़ी नदी है, जिसमें रेत ही रेत बिछी है। किनारे के पास एक पतली धार में पानी बह रहा है। सिर्फ बरसात के महीनों में नदी के दोनों किनारों तक पानी भरता है।

नदी के पास खेतों में भी दूर-दूर तक महीन मिट्टी बिछी है। यहां जब लोग कुआं खोदते हैं तो पांच-छः फीट तक मिट्टी निकलती है, फिर लगभग 20 फीट तक रेत निकलती जाती है। उसके नीचे गोल चिकने पत्थर मिलते हैं।

चित्र 2. तवा के पाट से रेत की ढुलाई

ये बालू, रेत, मिट्टी, पत्थर - सब तवा और अन्य नदी नालों में बह-बह कर आए हैं और यहां मैदान में बिछे हैं। नदी में लुढ़क-लुढ़क कर पत्थर भी गोल और चिकने हो गए हैं। नर्मदा, तवा और उनकी सहायक नदियों ने मिट्टी, रेत, बालू बिछा-बिछा कर यह सपाट मैदान बनाया है।

रास्ते में थोड़ी थोड़ी दूरी पर गांव मिले। जब हम किसी गांव के पास आने को होते तो हमें पहले ही पेड़ों के झुरमुट दिख जाते। वैसे तो हमें दूर-दूर तक कोई जंगल नहीं दिखता था – सब तरफ खेत थे। ऐसा क्यों? यह शायद इसीलिए होगा क्योंकि यहां मैदान की मिट्टी खेती के लिए बहुत अच्छी है। तभी लोगों ने पेड़ काटकर खेत बना लिए हैं।

इस तरह का मैदानी इलाका नर्मदा नदी के दोनों किनारों पर बहुत दूर तक फैला है।

मध्यप्रदेश के प्राकृतिक मानचित्र में नर्मदा का मैदान देखो - कहां से कहां तक फैला है?
इस मैदान में इनमें से कौन से नगर बसे हैं – हरदा, भोपाल, देवास, सागर, इटारसी, पिपरिया, बैतूल, नरसिंहपुर?
एक नदी के मैदान की क्या खास बातें हैं – यह बताने वाले पांच वाक्य ऊपर के अंश से चुनो।

* कोटगांव *

चलते-चलते हम बाबई शहर पहुंच गए थे। हमें लोगों ने बताया कि पास ही बागरा नाम के कस्बे में कवेलू बनाने का कारखाना है। हमने बागरा के कवेलू के बारे में सुन रखा था। तो हम बागरा की तरफ जाने लगे।

सड़क पर हमें कई गांव दिखे। हमारे मन में मैदान के गांवों के बारे में इतने सवाल कुलबुला रहे थे कि हम से रहा नहीं गया। एक कच्ची सड़क एक गांव की तरफ जाती दिखी। हम उसी पर चल

चित्र 3. कोटगांव की सपाट समतल भूमि

दिए और पहुंचे कोटगांव।

मैदान के और गांवों की तरह कोटगांव भी पेड़ों के झुरमुट के बीच बसा है। गांव के पश्चिम में तवा नदी बहती है। कोटगांव के बीच में बेलिया नाम का नाला बहता है और तवा में जा मिलता है। तवा की तरह बेलिया में भी बारिश में खूब पानी बहता है। बाकी महीनों में यह नाला भी सूख जाता है।

कोटगांव के खेतों में उपजाऊ मिट्टी बिछाने का काम बेलिया नाला भी करता है।

पृष्ठ 189 पर दिया कोटगांव का नक्शा देखो और उसमें बेलिया नाला पहचानो।

मिट्टी

नदी के मैदान में रहने वाले लोगों को फसल उगाने के लिए कैसी मिट्टी मिलती है? यह देखने हम कोटगांव के खेतों में घूमे। सबसे पहली सुविधा तो यह दिखी कि सब दूर खेतों में नदियों ने जो मिट्टी बिछाई है वह काफी गहरी और महीन है। नदी जंगलों से कूड़ा-कचरा, सड़े पत्ते व जड़ें भी बहाकर लाती है। ये चीज़ें भी मिट्टी में मिली हैं और इस कारण मिट्टी बहुत उपजाऊ है। उसमें कंकड़, पत्थर भी नहीं हैं। यह सुविधा हर जगह के लोगों को नहीं मिलती। जब हम पहाड़ और पठार पर जाएंगे तब इस बात को समझेंगे।

क्या तुम अन्दाज़ लगा सकते हो कि पहाड़ों की मिट्टी मैदान की मिट्टी से कैसे फर्क होगी?

मैदान में सब तरफ मिट्टी अच्छी तो है - पर उसमें भी कुछ फर्क है। कहीं-कहीं **चिकनी काली मिट्टी** है। कहीं **दोमट मिट्टी** है, जिसमें चिकनी मिट्टी और रेत बराबर-बराबर मिली रहती है।

नदी लाकर बिछाती उपजाऊ मिट्टी .....

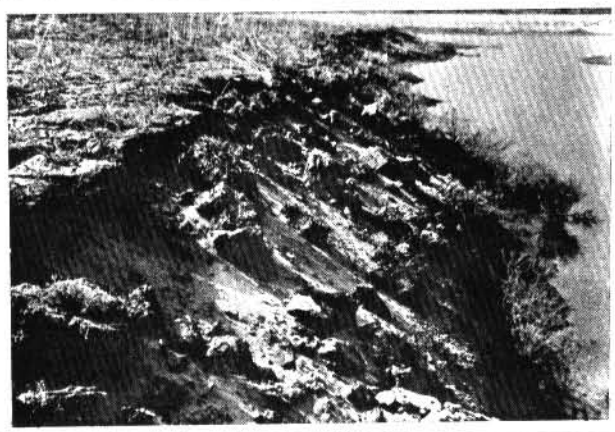

चित्र 4. यह तवा नदी का किनारा है। इस चित्र में ऊंचे रेतीले किनारे के ऊपर भारी दोमट मिट्टी की मोटी परत बिछी हुई दिख रही है। इस उपजाऊ दोमट मिट्टी के कुछ ढेले टूटकर रेतीले किनारे पर पड़े हुए हैं।

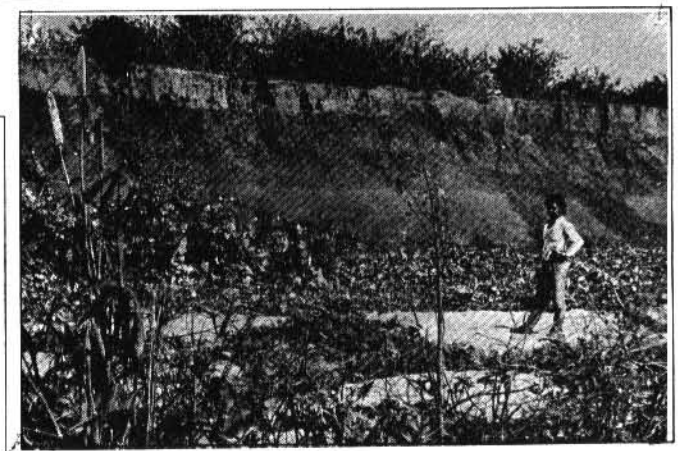

चित्र 5. इसमें साफ दिखाई दे रहा है कि नदी ने दोमट मिट्टी और रेत की कितनी परतें बिछाई है। इस तरह रेत और मिट्टी केवल नदी किनारे ही नहीं बल्कि दूर दूर तक बिछी हुई है। नदी का मैदान इसी तरह रेत और मिट्टी की परतों के बिछने से बनता है। चित्र में किनारे के ऊपर बिही (अमरूद) का बगीचा लगा है। नीचे रेत पर तरबूज़ के बाड़े बने हैं।

मिट्टी और फसलें

यहां की मिट्टी पर क्या हर तरह की फसल हो जाती है? यह जानने के लिये हमने कोटगांव के किसानों से बात की। उन्होंने बताया कि चिकनी और दोमट मिट्टी - दोनों ही गेहूं, चना, ज्वार, मसूर, तुअर, धान और सोयाबीन की फसल के लिए बहुत अच्छी हैं। इन मिट्टियों में पानी भी ठहरता है।

मगर पानी के रुकने के कारण दोमट मिट्टी में तिल और मूंगफली नहीं उगायी जा सकती। तिल और मूंगफली जैसी फसलें भुरभुरी सी मिट्टी में होती हैं, जिसमें पानी ज़्यादा न ठहरे। इन फसलों के लिए कुछ ढलवां ज़मीन हो तो और भी अच्छा है। यहां गन्ना भी नहीं उगाया जाता। इसलिए तेल और शक्कर जैसी चीज़ें दूसरे इलाकों से यहां बिकने आती हैं।

मिट्टी और बगीचे

बेलिया नाले के पास की मिट्टी में कई फलों के पेड़ उगाए गए हैं और बगीचे बने हैं। नींबू, आम, बेर, बिही, पपीते और जामुन के पेड़ उग रहे थे। किसानों ने बताया कि नाले के पास की मिट्टी में बालू-रेत ज़्यादा मिली रहती है। इसलिए यह मिट्टी ज्यादा **भुरभुरी** है। इसमें पानी नहीं रुकता है और इस कारण इस मिट्टी में फसल कम ही ले पाते है। लेकिन पेड़ों की लंबी-लंबी जड़ें भुरभुरी मिट्टी में नीचे तक जाकर पानी खींच पाती हैं। इसीलिए नदी-नाले के पास की मिट्टी बगीचों के लिए बहुत अच्छी है। (चित्र 4,5)

क्या तुम गांव में रहते हो? तुम्हारे यहां किस तरह की मिट्टी में कौन सी फसल होती है? कुछ ऐसी भी फसलें होंगी जो तुम्हारे यहां नहीं होतीं– क्या उनके लिए तुम्हारे गांव की मिट्टी ठीक नहीं है?

खाली स्थान भरो–

कोटगांव में ज़्यादातर ——— व ——— मिट्टी है। इसमें ———, ——— और ——— फसलें होती हैं, पर ———, ——— और ——— फसलें नहीं होतीं।

नदी-नालों के पास की मिट्टी ——————— होती है और इसमें ——————— लगाना आसान होता है।

सिंचाई

फसल कौन सी होगी, कितनी होगी यह सिर्फ मिट्टी पर निर्भर नहीं करता। कई फसलों के लिए सिंचाई का पानी चाहिए, क्योंकि वर्षा तो सिर्फ तीन-चार महीने होती है! क्या कोटगांव के किसान सिर्फ बारिश की फसल लेते हैं? अगर नहीं तो बाकी महीनों में खेती करने के लिए उन्हें पानी कैसे मिलता है? इस प्रश्न के बारे में हमने खोजबीन शुरू की।

असिंचित फसलें

कोटगांव में एक समय सिंचाई के साधन बहुत कम थे। बस कुछ कुओं पर **मोट** चलती थी। मोट से बहुत ज़्यादा ज़मीन सींची नहीं जा सकती। साल के अधिकतर समय में नदी में पानी भी कम रहता है और वह भी गहराई में। इसलिए इससे सिंचाई नहीं हो पाती थी।

इन कारणों से यहां अधिकतर ज़मीन पर खरीफ (बारिश) की फसल ली जाती थी। उस समय यहां कोदों, कुटकी, ज्वार और तुअर आदि फसलें उगायी जाती थीं। जहां कहीं सिंचाई होती थी, वहां रबी (सर्दी) में पानी देकर गेहूं व चना उगाया जाता था। बिना सिंचाई के भी गेहूं की फसल होती थी, पर उसकी पैदावार कम थी।

मगर आजकल नर्मदा के मैदान में सिंचाई का काफी प्रबंध किया जा रहा है।

बांध और नहरें

तवा नदी पर एक ऊंचा बांध बनाया गया है। उससे बरसात का पानी इकट्ठा किया जाता है। बांध से पानी जगह-जगह ले जाया जाता है। इस तरह होशंगाबाद के बड़े इलाके में सिंचाई का प्रबंध हुआ है।

ज़रा सोचकर बताओ, क्या इस तरह एक बड़े इलाके में नहरों से सिंचाई करना पहाड़ों में संभव है? नहरें बनाने में वहां क्या कठिनाई होगी जो मैदान में नहीं होती है?

अब तक कोटगांव के कुछ ही खेतों में नहर का पानी पहुंचा है। यहां अधिकतर सिंचाई तो कुओं से ही होती है।

कुएं

हमें मालूम पड़ा कि कोटगांव में कुएं आसानी से खुद जाते हैं। मैदान होने के कारण यहां ज़मीन खोदने पर चट्टान नहीं मिलती। यह सुविधा पहाड़ व पठार पर रहने वालों को नहीं मिलती है।

नदी पास में होने के कारण कोटगांव में पानी

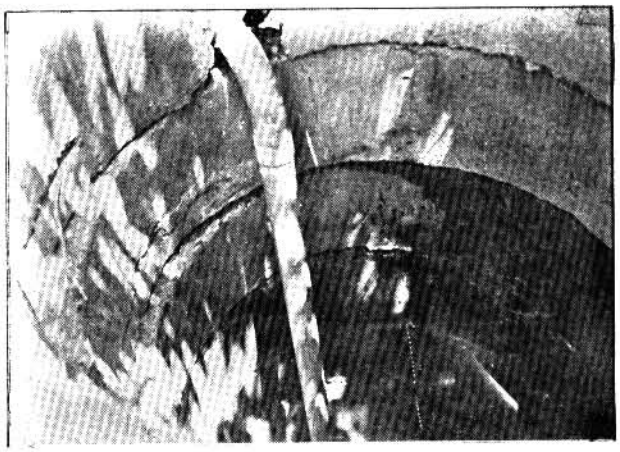

चित्र 6. रिंग कुआं

8 मीटर की गहराई पर ही मिल जाता है। मिट्टी के नीचे बालू, रेत और गोल पत्थरों के बीच बहुत पानी भरा रहता है।

कोटगांव में लगभग पांच-छः हज़ार रुपए में कुआं खुद कर तैयार हो जाता है। पहाड़ व पठार के किसानों को कुआं खुदवाना कहीं ज़्यादा महंगा पड़ता है।

तुम जहां रहते हो वहां कुआं खोदने पर चट्टान निकलती है या मिट्टी व रेत?

रिंग कुआं

कोटगांव में कुएं खोदने में एक कठिनाई ज़रूर होती है। कुछ पांच-छः फीट खोदने पर रेत निकल आती है। कुआं खोदते-खोदते मिट्टी व रेत उसमें धंसती जाती है।

पिछले कुछ सालों से इस कठिनाई से निपटने का एक तरीका खोजा गया है। आजकल कोटगांव और आसपास के गांवों में एक नई तरह का कुआं बनाया जाता है जिसे **रिंग कुआं** कहते हैं। जैसे चित्र 6 में दिखाया गया है।

पहले कई रिंग - यानी सीमेंट-कांक्रीट के घेरे बना लिये जाते हैं। जैसे-जैसे कुआं खुदता है, वैसे-वैसे ये रिंग कुएं के अंदर बैठाए जाते हैं। इससे रेत धंसने का डर नहीं रहता और कुआं खोदने के साथ ही इसकी पक्की दीवार भी बन जाती है। जहां रिंग का इस्तेमाल होता है, वहां कुएं की चौड़ाई भी कम रखी जा सकती है।

क्या तुम्हारे क्षेत्र में रिंग का कुआं बनता है?

मोटर पंप

मैदान में सिंचाई की सुविधा और कठिनाई की बात समझने पर हमारा ध्यान कुओं में लगी बिजली की मोटर और डीज़ल पंप पर गया। इन्हीं से पानी कुएं से निकाला जाता है। मोटर से 10-15 एकड़ तक की सिंचाई की जाती है।

समतल भूमि होने की वजह से पानी आसानी से छोटी नालियों द्वारा खेतों में दूर-दूर तक पहुंच जाता है। इतना पानी निकालने पर भी कुओं में पानी की कमी नहीं पड़ती। कोटगांव में सिंचाई के लगभग 50 कुएं हैं।

तुम्हारे गांव में सिंचाई कैसे होती है और कितनी होती है - कोटगांव से तुलना करते हुए चर्चा करो।

नदी-कुओं के होने पर भी पहले कोटगांव में ज़्यादा सिंचाई क्यों नहीं होती थी?

मैदान में नहर बनाना व कुआं खोदना आसान क्यों है?

कोटगांव के किसान कुएं में ईंट की चुनाई न करके रिंग क्यों डालते हैं?

क्या तुम अंदाज़ लगा सकते हो कि पिछले कुछ सालों में सिंचाई के कारण कोटगांव की खेती में क्या बदलाव आया होगा?

सिंचित फसलें

पहले बरसात के मौसम में सिर्फ कोदों, कुटकी, ज्वार उगाई जाती थी। इन्हें बहुत ज़्यादा पानी नहीं चाहिए। अब सिंचाई कर सकते हैं। खरीफ में धान व सोयाबीन जैसी फसलें उगाना आसान हो गया है। इन फसलों को ठीक समय पर पानी देना होता है। केवल बरसात के भरोसे इन्हें उगाना कठिन है।

पहले सर्दी के मौसम में बहुत कम गेहूं उगाया जाता था। अब सिंचाई के पानी से खूब गेहूं होता है। नई किस्म का गेहूं भी उगाया जाने लगा है। नई किस्म के गेहूं में पानी खूब देना होता है पर पैदावार भी बहुत ज़्यादा होती है। गेहूं के अलावा रबी में चना व मसूर भी उगाई जाती है।

कोटगांव में अब पहले की तुलना में सब्ज़ी बहुत उगाई जाने लगी है। सब्ज़ी उगाने के लिए भी खूब

चित्र 7. गेहूं की कटाई

चित्र 8. गर्मी में सब्ज़ी की खेती

पानी की ज़रूरत पड़ती है। सिंचाई की मदद से अब कोटगांव में गर्मी और सर्दी दोनों मौसमों की सब्ज़ी उगाई जाती है – जैसे टमाटर, बैंगन, भिण्डी, बरबटी।

गर्मी में, जब खेतों में फसल नहीं होती, नदियों में पानी नहीं होता, तब भी कुओं के पास के खेतों में सब्ज़ियां उगाई जाती हैं।

चित्र 9. रेत में उगती सब्ज़ी व फल

गर्मी, सर्दी या बरसात - कोटगांव के किसानों को अब हर मौसम में काम लगा रहता है।

तालिका भरो--

कोटगांव की फसलें

	सिंचाई से पहले	*सिंचाई के बाद*
गर्मी में		
सर्दी में		
बरसात में		

क्या तुम बता सकते हो कि पिछले कुछ वर्षों में कोटगांव के लोगों के भोजन में क्या-क्या परिवर्तन आए होंगे?

क्या तुम्हारे गांव में भी सिंचाई के कारण फसलों में, लोगों के काम में, भोजन में, कुछ बदला है?

नदी की रेत पर खेती

गर्मी में कोटगांव में हरी सब्ज़ी के अलावा तरबूज़ और खरबूज़ के ढेर भी दिखते हैं। ये कहां उगाए जाते हैं?

तवा के किनारे होने के कारण कोटगांव के किसानों को एक और फायदा है। तुमने देखा था कि तवा नदी की तलहटी पर खूब रेत बिछी थी। गर्मी के मौसम में इस रेत पर बाड़ियां बनाकर कई सब्ज़ियां या फल उगाए जाते हैं। नदी का पानी लेकर इनकी सिंचाई भी की जाती है। यहां उगाया गया कद्दू, लौकी, टिण्डा, तोरई, गिल्की, ककड़ी, खरबूज़, तरबूज़ आदि दूर-दूर के बाज़ारों में बिकने जाता है।

चारे की कमी

मैदान की अच्छी मिट्टी और पानी की सुविधा का उपयोग यहां के किसानों ने कैसे किया है – यह हम देख रहे थे। देखते-देखते हमारे ध्यान में यह बात आई कि यहां जितनी मिट्टी पर खेती की जा सके, की जाती है। झाड़-पेड़ बहुत कम हैं। यहां जानवरों के लिए हरे चारे की बहुत कमी होती होगी। किसानों से पूछा तो उन्होंने यह बात सही बताई। हरे चारे की कमी के कारण कोटगांव में पशुपालन कम ही होता है। खेती के लिए व घर में दूध की ज़रूरत के लिए गाय-बकरी पाले जाते हैं। दूध का धंधा कम ही होता है।

चित्र 10. सटे-सटे घर

घर व बस्ती

कोटगांव में लोगों के घर पास-पास बने हैं। मैदान में बसे गांवों में अक्सर ऐसा ही होता है। यहां आबादी अधिक है और घर बनाने के लिए ज़मीन कम। घर सटे-सटे बनाए जाते हैं, ताकि उपजाऊ भूमि पर ज़्यादा से ज़्यादा खेती की जा सके।

क्या तुम्हारे गांव में भी घर इसी तरह बने हुए हैं?

हमारी नज़र में यह बात भी आई कि कोटगांव के घरों की दीवारें आमतौर पर मिट्टी की बनी हैं व छतें बांस और खपरैल की। लकड़ी की बल्लियों का इस्तेमाल छत को सहारा देने के लिए किया गया है। कुछ धनी लोगों के घर ईंट के भी बने हैं। यानी, घर बनाने के लिए मुख्य रूप से मिट्टी का इस्तेमाल होता है और थोड़ी बहुत लकड़ी का। ये चीज़ें आसपास आसानी से मिल जाती हैं।

बाज़ार

कोटगांव के इस दौरे से हम लौटने लगे। हम सोचते जा रहे थे कि मैदान के किसान पानी और मिट्टी की सुविधा के कारण साल भर में कितनी सारी चीज़ें उगा लेते हैं। उनके परिवार की ज़रूरत से ऊपर जो उपज बचती होगी उसको वे कहां बेचते होंगे?

मैदानों में भूमि अच्छी है, पानी अच्छा मिल जाता है – इसलिए, यहां बहुत सारे गांव बसे हैं। चारों तरफ, थोड़ी-थोड़ी दूरी पर गांव हैं। आसपास ही होशंगाबाद, बाबई, इटारसी, बागरा, सोहागपुर, पिपरिया, जैसे शहर हैं। इस क्षेत्र में बड़ी घनी आबादी है। इन्हीं शहरों में वे अपनी उपज बेचते हैं। यहां उन्हें अच्छे भाव मिल जाते हैं।

चित्र 11. नर्मदा के मैदान में चैत करने आये पहाड़ों के आदिवासी

फिर, खरीदने वालों तक किसान अपनी उपज पहुंचा पाएं, इस बात की भी कठिनाई नहीं है। सीधा, सपाट मैदान है – यहां सड़कें व रेल लाईनें बिछाना आसान है।

चारों तरफ बहुत सारी बस्तियां हैं – उनके बीच लोगों का आना जाना लगा रहता है। इस कारण चारों तरफ कई कच्ची पक्की सड़कें बिछी हुई हैं। हर तरफ जाकर किसान अपनी उपज बेच सकता है। कोटगांव के किसान भी बाबई, इटारसी, होशंगाबाद, बागरा में उपज बेचने जाते हैं।

मज़दूरों की ज़रूरत

इस पूरे क्षेत्र में कई गांव हैं और उनमें खूब खेती होती है – इस कारण कोटगांव के मज़दूरों को आसपास ही मज़दूरी भी मिल जाती है। उन्हें खेती में मज़दूरी मिल जाती है और आसपास के शहरों में लगे छोटे-बड़े कारखानों (जैसे बागरा का कवेलू कारखाना) में भी काम मिल जाता है। यहां के मज़दूर दूर-दूर तक मज़दूरी की तलाश में नहीं जाते।

यह बात हमें इसलिए ध्यान में आई क्योंकि हमने सुन रखा था कि पहाड़ों पर रहने वाले आदिवासी मैदानी गांवों में **चैत करने** आते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि मैदानों में खेती का इतना काम हो जाता है कि बाहर से मज़दूर यहां काम ढूंढने आ जाते हैं।

हाल में कई किसान हार्वेस्टर किराए पर लेकर अपने खेतों की फसल कटवाने लगे हैं। मज़दूरों की तुलना में हार्वेस्टर से कटाई बहुत तेज़ी से पूरी हो जाती है। क्या तुमने हार्वेस्टर देखा है? इससे कितने काम एक साथ हो सकते हैं?

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. कोटगांव किस नदी के मैदान में बसा है? उस नदी से गांव के लोगों को क्या-क्या लाभ है पृष्ठ 180, 181 व 184 में दी जानकारी ढूंढ कर उत्तर लिखो।
2. क्या कोटगांव के कुओं में साल भर पानी मिलता रहता है? इनसे किस मौसम में कौन सी फसलों के खेत सींचे जाते हैं?
3. नदियों के किनारे फलों के बगीचे क्यों लगाये जाते हैं?
4. कोटगांव के किसान अपनी उपज क्यों बेचते हैं?
5. कोटगांव की उपज किन बाज़ारों में बिकने जाती है?
6. कोटगांव के मज़दूरों को चैत करने बहुत दूर क्यों नहीं जाना पड़ता - सिर्फ दो वाक्यों में लिखो।
7. क) मैदान में मिट्टी अच्छी क्यों होती है?
   ख) समतल ज़मीन के क्या-क्या फायदे पाठ में बताए गए हैं?
8. नहर व कुएं से सिंचाई की तुलना करो। दोनों के एक-एक फायदे व एक-एक नुकसान सोचो।
9. यहां दिए वाक्यों में से गलत वाक्यों को सुधारो–
   क) कोटगांव के किसान अपनी उपज बहुत कम बेच पाते हैं।
   ख) कोटगांव के आसपास बहुत से गांव व शहर हैं।
   ग) कोटगांव की बस्ती दूर-दूर तक बिखरी हुई है।
   घ) मैदान में सड़कें व रेल लाईनें बिछाना कठिन है।
   ङ) कोटगांव के किसान मज़दूरी की तलाश में दूर-दूर तक घूमते हैं।
10. रिक्त स्थान भरो-
    क) कुओं में रेतीली मिट्टी को धंसने से रोकने के लिए ——— कुएं बनाए जाते हैं।
    ख) कोटगांव में ——————— की कमी के कारण दूध का धंधा कम होता है।

गांव और सीमा

आगले पृष्ठ पर कोटगांव का मानचित्र है। संकेत सूचि देखकर समझो कि इसमें क्या-क्या दिखाया है। अब इन प्रश्नों के उत्तर दो–

- पक्की सड़क कोटगांव की किस दिशा में है?
- कोटगांव की बस्ती में क्या-क्या चीज़ें दिख रही हैं?
- खेत बस्ती के पूर्व में आधिक हैं कि पश्चिम में??
- कोटगांव में कितने कुएं और नलकूप हैं?
- नलकूप कहां पर अधिक हैं – बेलिया नाले के उत्तर में या दक्षिण में?

गांव की सीमा

कोटगांव के नक्शे में गांव के चारों ओर उसकी सीमा बनी हुई है।

सीमा का संकेत पहचानो। नक्शे में कोटगांव की सीमा पर उंगली फेरो।

सीमा के अन्दर कोटगांव के खेत हैं और उसकी दूसरी तरफ दूसरे गांव के खेत हैं।

नक्शे में देखो कि कोटगांव के खेत उत्तर दिशा में जहां खत्म होते हैं वहां गूजरवाड़ा गांव के खेत शुरू हो जाते हैं।

- दक्षिण दिशा में कोटगांव के खेतों के बाद किस गांव के खेत हैं?
- कोटगांव की पूर्व दिशा में किस गांव के खेत हैं?
- मानागांव के कितने कुएं इस नक्शे में दिखाए गए हैं?

यहां तीन गांवों की सीमा बनी है। इन तीनों में से कोटगांव का आकार कौन सा है? सही चित्र के बीच में कोटगांव लिखो।

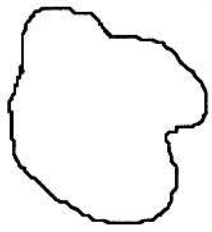

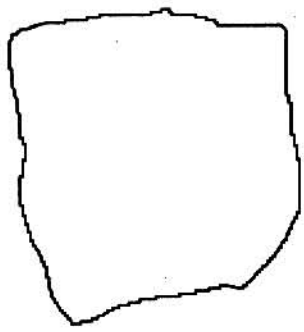

कोटगांव का नक्शा

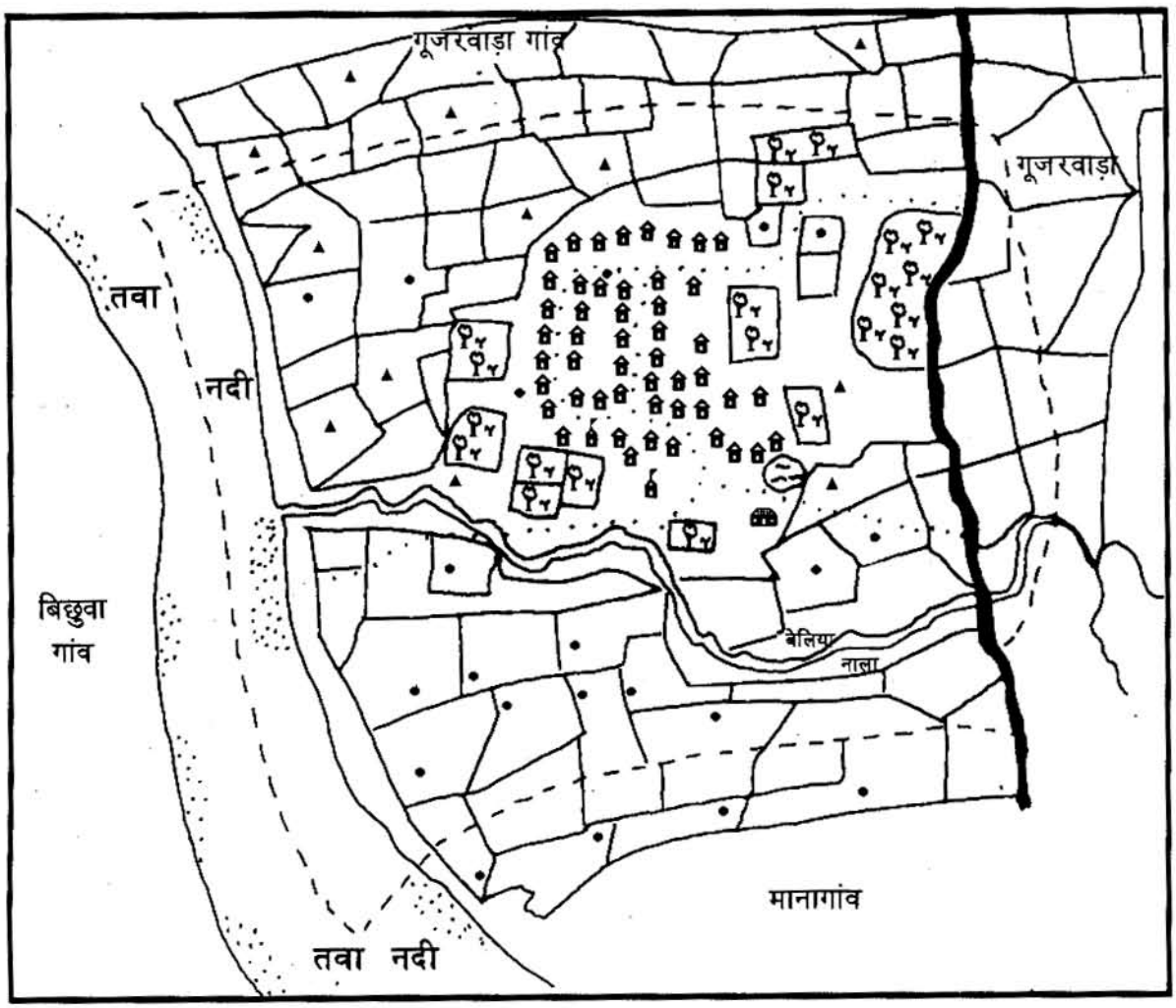

संकेत

गांव की सीमा		तालाब		मंदिर	
कच्ची सड़क		बगीचा		नलकूप	
पक्की सड़क		रेत का जमाव		कुंआं	
नदी/नाला		घर			
खेत		शाला			